राल्फ बंच – शांतिदूत

नोबेल पुरुस्कार विजेता

एन डोनेगन जॉनसन

राल्फ बंच – शांतिदूत

नोबेल पुरुस्कार विजेता

एन डोनेगन जॉनसन

यह कहानी एक बहुत ही जिम्मेदार व्यक्ति राल्फ बंच के बारे में है. कहानी उनके जीवन की घटनाओं पर आधारित है. राल्फ बंच के बारे में अधिक ऐतिहासिक तथ्य पुस्तक के अंत में हैं.

काफी समय पहले की बात है, राल्फ बंच नाम का एक छोटा लड़का डेट्रॉइट के नीग्रो जिले के मध्य में एक गरीब घर में रहता था.

राल्फ अपने परिवार के साथ रहता था, और उसका परिवार काफी बड़ा था. सबसे पहले उसकी पतली, बहादुर छोटी दादी जॉनसन थीं. फिर राल्फ के माता-पिता थे - उसके सौम्य, मृदुभाषी पिता, फ्रेड, और उसकी माँ, ओलिव एग्नेस. राल्फ की मौसी नेले और एथेल भी उनके साथ ही रहती थीं. और घर में सभी लोग बड़ी मेहनत करते थे!

राल्फ के पिता उस इमारत की पहली मंजिल पर स्थित नाई की दुकान में काम करते थे. वो एक डाइम (सिक्के) में बाल काटते और एक दाढ़ी बनाते थे.

लेकिन इतने बड़े परिवार को चलाने के लिए वो सिक्के बहुत कम पड़ते थे. इसलिए राल्फ की माँ और मौसी और दादी जॉनसन भी काम करती थीं. कभी-कभी महिलाएं अपना काम घर से बाहर करती थीं. कभी-कभी वे अपना काम घर ले आती थीं.

एक दिन राल्फ ने घर में अपनी माँ और दादी जॉनसन को टेबल पर सिलाई करते हुए पाया. वे एक पास में स्थित खिलौनों की फैक्ट्री के लिए गुड़ियों के कपड़े सिल रही थीं. दादी जॉनसन ने कहा, "हमें हर पोशाक सिलने के लिए बीस सेंट मिलेंगे."

"पैसे अच्छे हैं - पर हमें काफी तेजी से काम करना होगा."

भले ही वो केवल सात वर्ष का था लेकिन राल्फ भी काम करता था. हर दिन स्कूल के बाद वो सड़क के किनारे अखबार बेचता था.

"मज़ेदार खबर!" वो चिल्लाता. "ताज़ी खबरे पढ़ें! अपना दैनिक पेपर पढ़ें!"

अखबार बेचना ख़त्म करने के बाद राल्फ अपने सिक्कों का ढेर घर ले जाता था और उन्हें मेज पर रख देता ताकि दादी उन्हें गिन सकें. किसी-किसी हफ्ते वो एक डॉलर से अधिक कमा लेता था.

"क्या यह अच्छा नहीं है?" राल्फ कहता. "कि मैं अपने हिस्से का काम कर रहा हूँ!"

दादी बस मुस्कुरातीं थीं. वो कभी राल्फ को इतनी मेहनत करने से रोकती नहीं थीं. उन दिनों ज्यादातर परिवारों में, हर सदस्य को काम करना पड़ता था जिससे परिवार सुचारु रूप से चल सके.

बहुत पहले, राल्फ ने पाया कि अगर वो नीग्रो मोहल्ले में ही रहा तो वो बहुत सारे अख़बार नहीं बेच सकता था. क्योंकि बहुत से काले लोगों के पास अखबार खरीद खरीदने के लिए पैसे ही नहीं थे.

"ठीक है," राल्फ ने खुद से कहा. "मैं यहां नहीं रहूंगा. मैं वहां जाऊंगा जहां लोगों के पास ज्यादा पैसे होंगे."

फिर राल्फ, कैडिलैक स्क्वायर नामक जगह चलकर गया. उसने वहाँ पर थिएटर, बढ़िया दुकानें और फैंसी कपड़े पहने लोगों की भीड़ देखी.

"यही वो जगह है जहाँ मुझे होना चाहिए," राल्फ ने सोचा कि वो किनारे पर खड़ा हो गया. "अख़बार!" वो चिल्लाया. "अख़बार खरीदें!"

वो बहुत छोटा था पर बहुत साहसी था, और फिर बहुत से शालीन लोगों ने उससे अख़बार खरीदे.

राल्फ उस रात घर जाते समय बहुत खुश और उत्साहित था. उसके पास दादी जॉनसन के लिए सिक्कों का एक बड़ा ढेर था. उनके पास उन्हें सुनाने के लिए कई कहानियाँ भी थीं, उन महिलाओं के बारे में जिन्हें उसने उनके स्टाइलिश गाउन और महंगे कपड़े पहने देखा था, और पुरुषों को चमकदार टोपियों और बढ़िया सूटों में.

"कुछ लोग इस तरह रहते हैं," दादी जॉनसन ने कहा. "देखो, सच में लोगों के कपड़े महत्वपूर्ण नहीं होते हैं. महत्वपूर्ण वो होता है कि लोग अपने बारे में कैसा महसूस करते हैं."

तब दादी ने राल्फ को उसके दादाजी राल्फ जॉनसन के बारे में बताया. "देखो, तुम्हारा नाम, दादाजी के नाम पर ही रखा गया है," दादी ने कहा, "वो एक गुलाम पैदा हुए थे. एक गुलाम पैदा होने में शर्मिंदा होने की कोई बात नहीं है. तुम जो भी हो, उस पर तुम कभी भी शर्मिंदा मत होना, राल्फ. अपने ऊपर गर्व करना जैसे तुम्हारे दादाजी करते थे. वो एक अच्छे इंसान थे. अगर तुम सही रास्ते पर चले, तो तुम एक दिन कुछ खास बनोगे."

फिर दादी ने राल्फ को गले लगाया और उसे बिस्तर पर भेज सोने दिया. और वो अपनी सिलाई करने वापस चली गई.

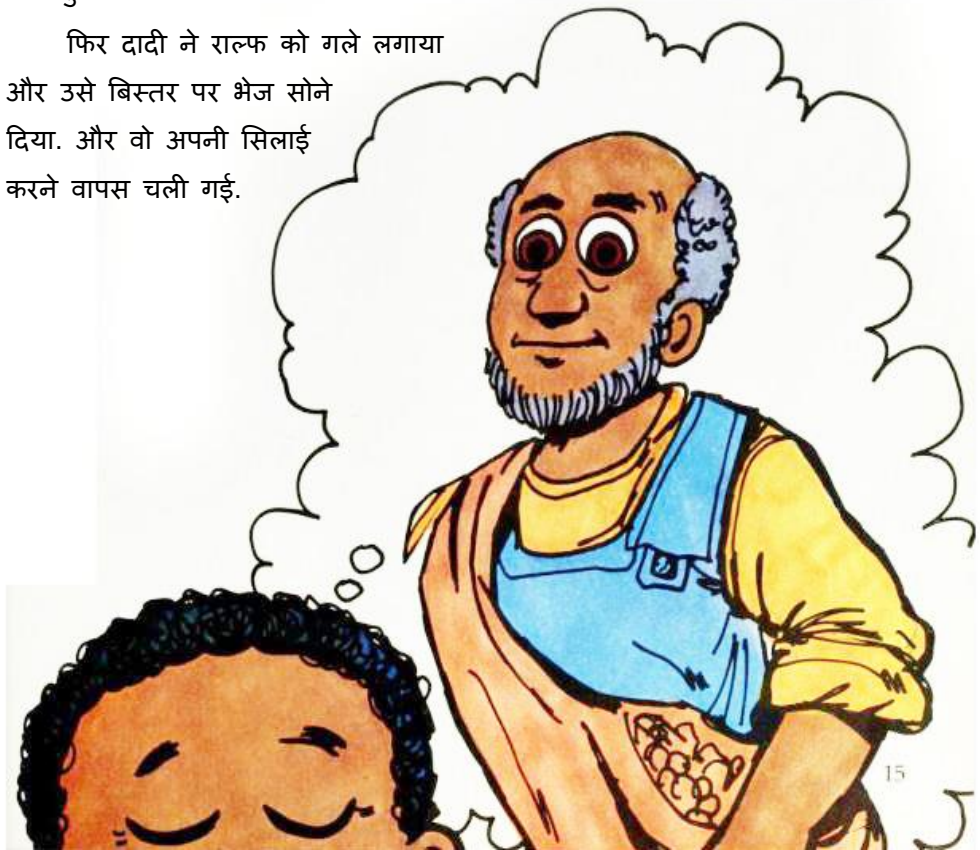

राल्फ हर समय काम नहीं करता था. बेशक वो स्कूल और होमवर्क करता था और वो अखबार बेचता था. फिर भी उसे हमेशा दूसरे लड़कों के साथ सड़क पर खेलने का समय मिलता था. ब्रूम्स्टिक बेसबॉल उनका पसंदीदा था. लेकिन खेल हमेशा सुचारू रूप से नहीं चलता था. खेल में कभी-कभी झगड़े भी होते थे.

"मैं एकदम सुरक्षित स्थान पर था!" खेल में एक लड़का चिल्लाया.

"दौड़ते रहो!" दूसरा चिल्लाया. "तुम ऑउट हो गए थे!"

"नहीं!" राल्फ ने कहा. "हमें एक अंपायर की जरूरत है!"

"पर मैं अंपायर के बारे में नहीं जानता!" राल्फ के पास एक छोटी सी आवाज ने कहा.

राल्फ ने मुड़कर देखा. उसके पास एक बाड़ पर झुका एक नीले रंग के सूट और टोपी में, एक छोटा आदमी खड़ा था.

"मुझे अम्प बुलाओ," उस छोटे आदमी ने कहा. उसने अपने चेहरे के मुखौटे को अपने सिर के ऊपर से हटा दिया ताकि राल्फ उसकी काली, शरारती आँखों को देख सके. राल्फ की तरह ही उसकी भी एक चौड़ी मुस्कान थी. वास्तव में, वो काफी हद तक देखने में राल्फ की तरह ही था.

"तुम एक चतुर लड़के हो," उस छोटे आदमी ने कहा. "तुम्हें पता है कि कौन सा पक्ष सही है और कौन सा पक्ष गलत है, फिर तुम्हें अपने विवादों को निपटाने के लिए अंपायर की आवश्यकता क्यों है? तुम उन्हें खुद मिलकर सुलझाओ!"

राल्फ मुस्कुराया. वो जानता था कि असल में वहां पर नीले रंग के सूट में कोई भी छोटा आदमी नहीं था. राल्फ जानता था कि उसने खुद अम्प की कल्पना की थी, और जब उसने अम्प की बात सुनी, तो असल में वो बस अपने ही विचारों को सुन रहा था. लेकिन राल्फ को एक काल्पनिक दोस्त का आइडिया पसंद आया. जब गेंद का खेल समाप्त हुआ, तो राल्फ अम्प को अपने साथ घर ले गया.

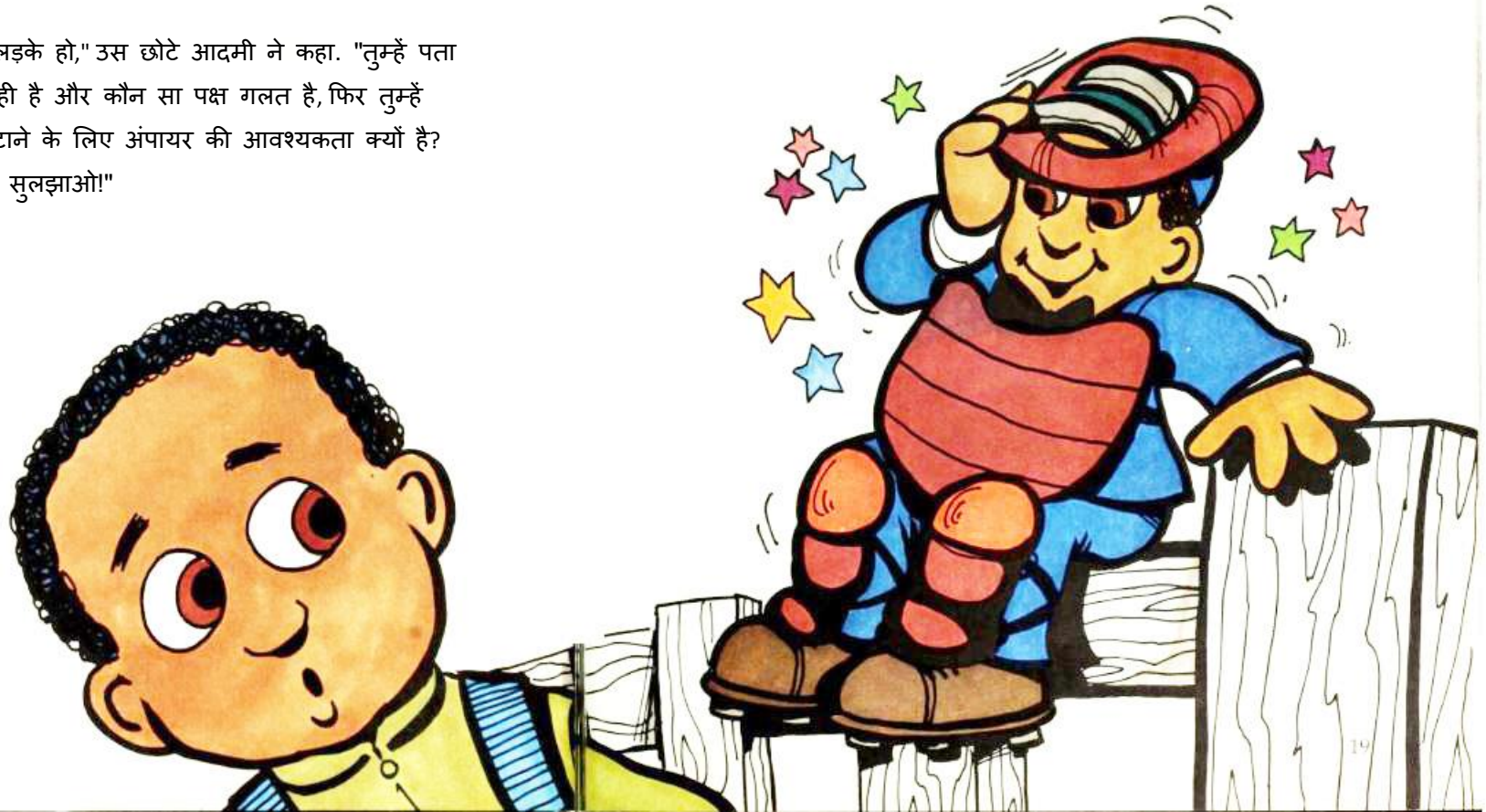

"कितनी व्यस्त जगह है!" अम्प ने कहा, जब उसने राल्फ के पुराना घर को देखा. राल्फ की माँ और उसकी मौसियां गुड़ियों के कपड़े सिल रही थीं, और दादी जॉनसन रात का खाना बना रही थीं.

"राल्फ, तुम घर में मदद के लिए क्या करते हो?" अम्प ने पूछा.

"मैं अखबार बेचता हूं," राल्फ ने कहा. "जब मैं बड़ा हो जाऊंगा, तो मैं और ज़्यादा अखबार बेचूंगा."

"मुझे यकीन है कि तुम वो ज़रूर करोगे," अम्प ने कहा. "क्योंकि तुम एक जिम्मेदार लड़के हो."

"ज़िम्मेदार?" राल्फ के दिमाग में वो शब्द गूंज उठा. उसने वो शब्द पहले सुना था, लेकिन उसने अभी तक उसके बारे में गंभीरता से कभी में नहीं सोचा था.

"जिम्मेदार का क्या अर्थ होता है?" राल्फ ने जोर से पूछा.

दादी जॉनसन जो चूल्हे पर थीं, उन्होंने राल्फ को सुना. "जब आप देखते हैं कि क्या करने की ज़रुरत है और आप वो काम करते हैं, तो वो जिम्मेदार होना कहलाता है," दादी ने राल्फ से कहा. "पर तुमने ऐसा क्यों पूछा?"

"ओह, आज मुझे एक नया दोस्त मिला," राल्फ ने कहा. "उसने मुझे बताया कि मैं जिम्मेदार हूँ."

उसके बाद अम्प, राल्फ के साथ हर जगह गया. अम्प और राल्फ ने हर विषय के बारे में बातें कीं. एक दिन उन्होंने उन लोगों के बारे में बात की, जिन्हें राल्फ ने कैडिलैक स्क्वायर में अखबार बेचते हुए देखा था.

"वो उचित नहीं है," राल्फ ने अम्प से कहा. "वहां की महिलाओं के पास सुंदर कपड़े थे और वे महंगी गाड़ियों में सवारी कर रही थीं. लेकिन मेरी दादी और माँ और मौसी को इतनी मेहनत करनी पड़ती है!"

"तुम उससे परेशान मत हो," अम्प ने चेतावनी दी. "यदि तुम गुस्सा होगे तो तुम केवल खुद को चोट पहुँचाओगे. बस जिम्मेदार बने रहो. जो करने की जरूरत है वो करते रहो, और फिर धीरे-धीरे चीजें बेहतर होंगी."

इसलिए राल्फ ने अपने आप को गुस्सा और उदास नहीं होने दिया, और वो वही करता रहा जो किया जाना चाहिए था. वो काम करता रहा और पढ़ाई भी करता रहा. बीच-बीच में उसने बेसबॉल भी खेला. और उसने हमेशा अपनी दादी की मदद की.

फिर, जब राल्फ दस साल का हुआ, तब परिवार में काफी परिवर्तन आया.

राल्फ की छोटी बहन ग्रेस का जन्म हुआ. राल्फ ने बारी-बारी से दादी और मौसी के साथ बच्ची की देखभाल की. राल्फ की माँ हमेशा बच्ची को नहीं देख पाती थीं क्योंकि वो बीमार रहती थीं. राल्फ के पिता भी बीमार थे. वो हर समय खांसते रहते थे. जल्द ही वो काम करने की हालत में नहीं रहे.

"मिसेज़ बंच को रूमेटिक बुखार है," डॉक्टर ने दादी को बताया. "और मिस्टर बंच - को तपेदिक यानि ट्यूबरक्लोसिस है."

उन दिनों कई काले लोगों को क्षय रोग होता था. तब उस बीमारी को ठीक करने के लिए कोई चमत्कारिक दवाएँ नहीं थीं, और गरीब लोगों के बीमार पड़ने पर उनकी मदद लिए मुफ्त क्लीनिक भी नहीं थे.

"हमें कुछ करना होगा," राल्फ ने कहा, "और हम जो कुछ भी करेंगे, उसमें शायद पैसे खर्च होंगे."

अम्प ने आह भरी. "हर चीज़ में खर्चा होता है," वो सहमत था.

इसके कुछ दिनों बाद एक रात जब राल्फ घर आया तो उसने दादी और मौसी को मेज पर बैठे पाया. बार-बार, दादी पैसे के एक छोटे ढेर को गिन रही थीं. दादी बहुत गंभीर लग रही थीं.

"हम इस जगह को छोड़कर जाने वाले हैं," दादी ने राल्फ से कहा. "हम अलबुरकेरके, न्यू मैक्सिको जायेंगे. वहाँ गर्मी और धूप होगी, और वहां की हवा शुष्क होगी. हो सकता है कि वहाँ तुम्हारी माँ को बेहतर महसूस हो. और हो सकता है कि वहां तुम्हारे पिताजी को इतनी खांसी न हो. जैसे ही हमारे पास ट्रेन के किराए के लिए पर्याप्त पैसा होंगे, हम वहां तुरंत चले जायेंगे."

"मुझे पता था!" राल्फ ने अम्प को कहा. "मुझे पता था कि हमें और ज़्यादा पैसे की आवश्यकता होगी. और मैं अखबार बेंचकर ज़्यादा पैसे नहीं कमा पा रहा हूं. मुझे और मेहनत करनी चाहिए. शायद अगर मैं स्कूल छोड़ दूं ..."

"ज़रा ठहरो!" अम्प चिल्लाया. "एक सेकंड रुको! ज़रूर, तुम्हारे ऊपर अपने परिवार की ज़िम्मेदारी है. लेकिन तुम्हें खुद के प्रति भी जिम्मेदार बनना होगा. यदि तुम स्कूल छोड़ दोगे, तो फिर तुम जीवन भर बेवकूफ बने रहोगे?"

राल्फ जानता था कि अम्प सही था. इसके अलावा, दादी उसे कभी स्कूल छोड़ने नहीं देंगी. फिर उसने अगला सबसे अच्छा काम किया. उसने अखबार बेचना छोड़ दिया और जूते पॉलिश करना शुरू कर दिया.

बेशक, दादी हमेशा काम करती रहीं, और मौसी नेले और एथेल ने भी वही किया. जल्द ही परिवार के पास अल्बुकेरके के टिकट खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे हो गए.

जब वे ट्रेन में चढ़ने के लिए स्टेशन गए तो राल्फ बहुत उत्साहित था. वो दूसरों से आगे भागा.

"चलो!" वो चिल्लाया. "जल्दी करो!"

"सावधान!" अम्प ने चेतावनी दी. "वर्दी में वो आदमी तुम्हें देख रहा है, और वो काफी गुस्से में दिखता है."

दरअसल कंडक्टर राल्फ पर चिल्ला रहा था. उन दिनों कुछ ट्रेनों में कोच होते थे जिन्हें "जिम-क्रो" कोच कहा जाता था. यात्रा के दौरान, काले लोगों को उन्हीं डिब्बों में सवार होना पड़ता था. देश के कुछ हिस्सों में सार्वजनिक बसों में भी "जिम क्रो" खंड होते थे, और आमतौर पर वे बसों के पिछले हिस्से में स्थित होते थे.

"सुनो, लड़के!" कंडक्टर चिल्लाया जब उसने राल्फ नियमित गोरों के डिब्बों में चढ़ते हुए देखा. "तुम उनमें सवारी नहीं कर सकते. ट्रेन के पिछले हिस्से में जाओ."

"यह सही नहीं है!" राल्फ ने कहा, जब वो और अम्प परिवार के बाकी लोगों के साथ "जिम-क्रो" कोच में बैठे.

"बेशक, यह सही नहीं है," दादी ने कहा, "लेकिन अभी हालात ऐसे ही हैं. शायद किसी दिन यह सब बदलेगा."

"हालात को बदलना ही होगा," राल्फ ने कहा. "लोग उम्मीद करते हैं कि काले लोग जिम्मेदार हों और वो सुविधाओं के उपयोग के लिए पैसे दें. पर जब हम पैसे देते हैं, तो हमे वो सुविधाएं भी मिलनी चाहिए जिसके लिए हमने पैसे दिए हैं."

"तुम्हारे लिए यह अच्छा है!" अम्प ने कहा. "तुम धीरे-धीरे चीज़ों को समझ रहे हो! जिम्मेदारी दोनों तरह से काम करती है. आपको जिम्मेदार बनना होगा. आपको वो करना होगा जिसे करने की जरूरत है. लेकिन आपको यह भी देखना होगा कि दूसरे लोग आपके साथ सही व्यवहार करें!"

"अगर संभव होगा तो मैं फिर कभी "जिम-क्रो" कोच में सवारी नहीं करूंगा," राल्फ ने कहा.

"मुझे आशा है कि तुम्हें फिर से वो कभी नहीं करना पड़ेगा," अम्प ने कहा.

ट्रेन स्टेशन से बाहर निकली और फिर कई ग्रामीण इलाकों से होकर गुज़री. राल्फ कुछ देर बाहर देखता रहा. फिर वो सो गया. वो जब फिर जागा तो उसे लगने लगा जैसे वो सालों या सदियों से सवारी कर रहा था. अम्प ने उसे अपनी कुहनी से जगाया.

"हम पहुँच गए हैं!" अम्प ने कहा.

अब वे अल्बुकेरके में थे. राल्फ ने उस तरह की जगह पहले कभी नहीं देखी थी.

"वो एक इंडियन है!" राल्फ ने कहा, जब उसने रेलवे स्टेशन पर एक लंबा बहादुर आदमी देखा. "एक असली, जीवित इंडियन!"

"क्या तुम्हें लगता है कि इंडियन केवल इतिहास की किताबों में होते हैं?" अम्प ने पूछा. फिर राल्फ ने मैक्सिकन महिलाओं को देखा जो सड़कों पर एक-दूसरे के साथ बातचीत कर रही थीं. राल्फ ने भूरी चमड़ी वाले लड़कों की ओर हाथ हिलाया जो गधों पर सवार थे.

"लगता है कि मुझे यह जगह पसंद आएगी," राल्फ ने कहा.

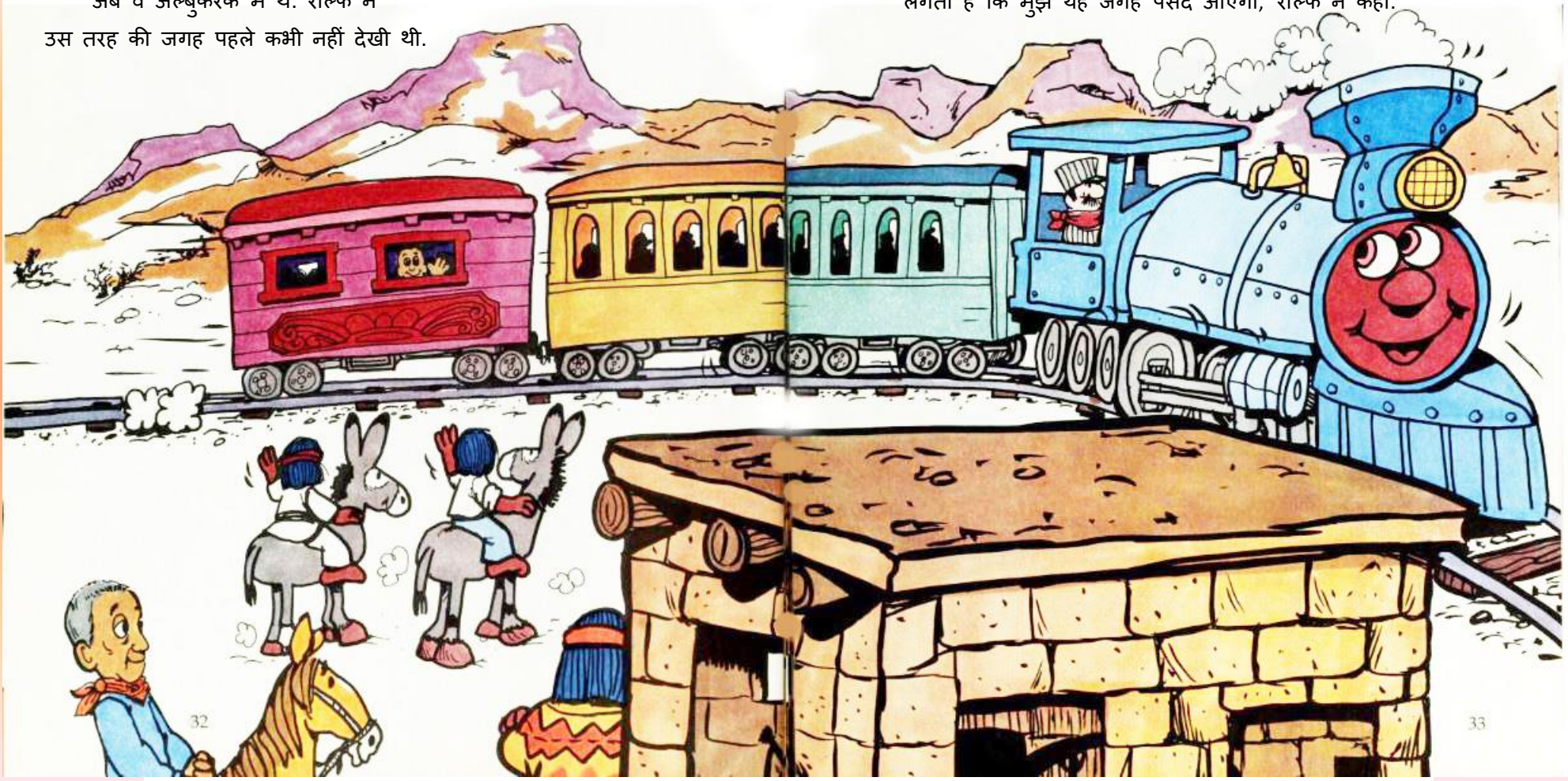

राल्फ को वो जगह पसंद आई. लेकिन जब दादी उसका दाखिला कराने के लिए फोर्थ वार्ड एलीमेंट्री स्कूल ले गईं तो वे थोड़े घबराए हुए थे. उसकी कक्षा में केवल राल्फ ही एक काला छात्र था.

"मुझे लगता है कि वापस डेट्रॉइट में रहना आसान होता," राल्फ, अम्प से फुसफुसाया. "वहां अधिक काले बच्चे थे."

लेकिन फिर टीचर आईं. उन्होंने कहा, "मेरा नाम मिस एम्मा स्वीट है," और उन्होंने अपना नाम बोर्ड पर लिखा ताकि हर कोई उनके नाम को याद रख सके. टीचर की एक अच्छी मुस्कान थी, और जब टीचर ने छात्रों से बात की, तो उन्होंने हरेक बच्चे की आँखों में देखा.

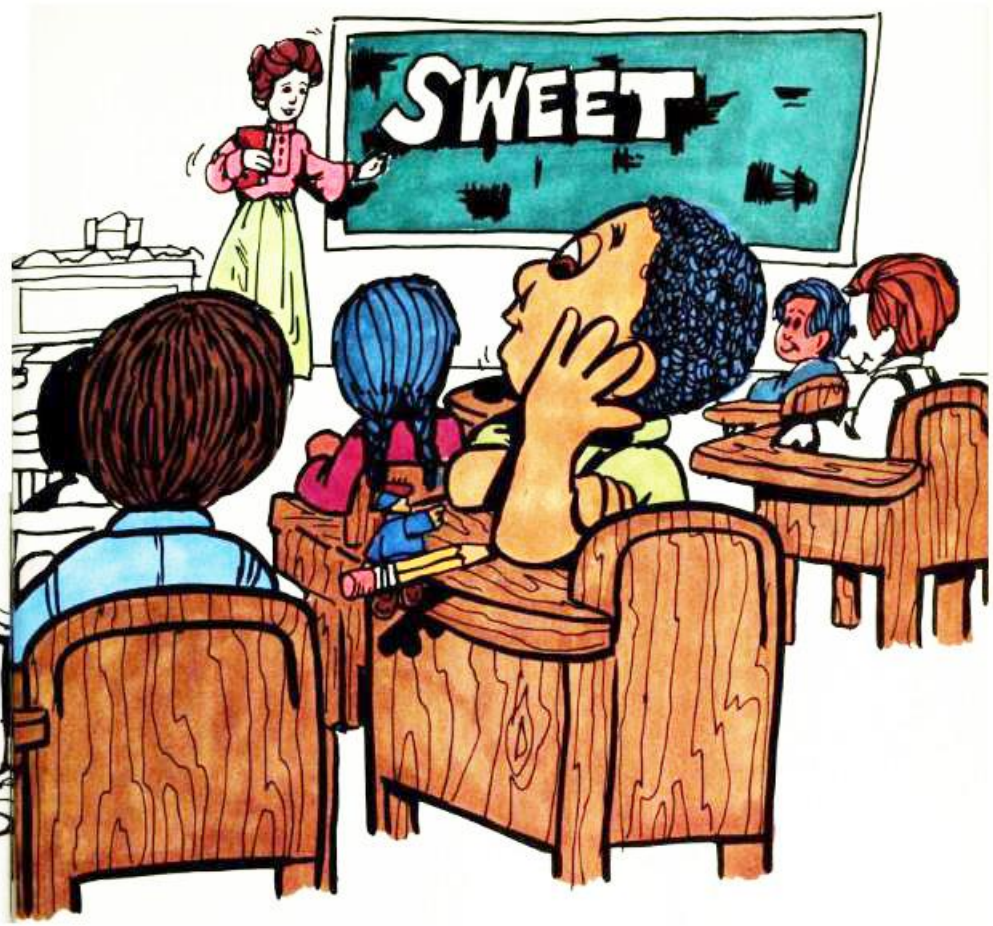

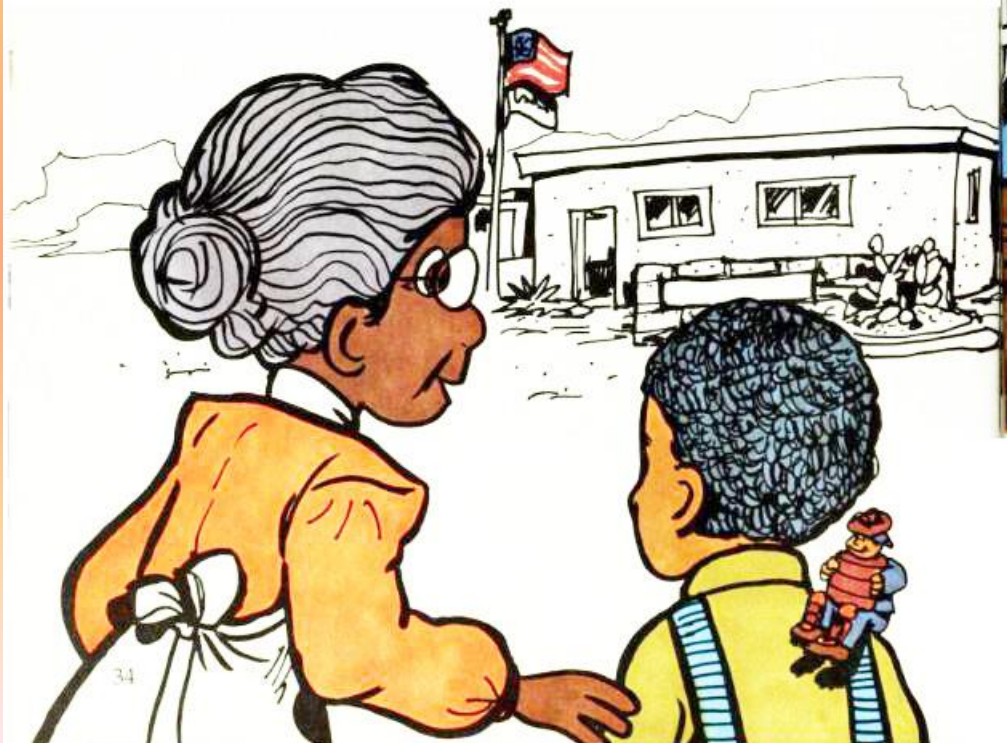

"मुझे टीचर पसंद हैं," अम्प ने धीमी आवाज़ में कहा. "ऐसा लगता है कि वो निष्पक्ष होंगी. मैं शर्त लगा सकता हूं कि टीचर को उसे कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि तुम काले हो."

अम्प हमेशा की तरह सही था, क्योंकि टीचर को सच में उससे कोई फर्क नहीं पड़ा. मिस स्वीट एक जन्मजात शिक्षिका थीं, और वो अपने छात्रों का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कैसे बाहर निकालना है वो जानती थीं. राल्फ ने हमेशा स्कूल में अच्छा प्रदर्शन किया था, लेकिन अब वो वास्तव में प्रतिभाशाली हो गया था.

"तुम एकदम आदर्श हो!" अम्प ने उसे छेड़ा.

लेकिन राल्फ परिपूर्ण नहीं था. बिल्कुल भी नहीं. जब वो अन्य छात्रों से पहले अपना काम समाप्त करता, तो वो अपने बगल वाले लड़के से बातें करता था. कभी-कभी वह थूक के गोले फेंकता था. और जब कोई नहीं देख रहा होता था, तो वो सीढ़ियों की रेलिंग पर बैठकर नीचे फिसलता था.

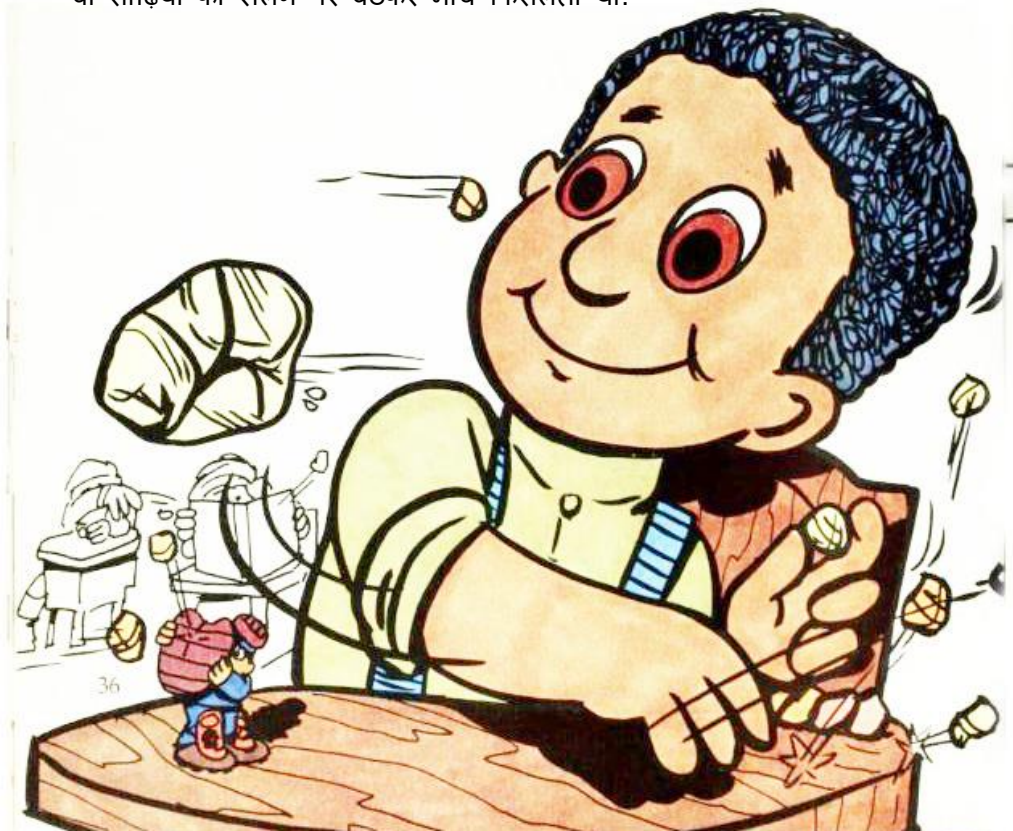

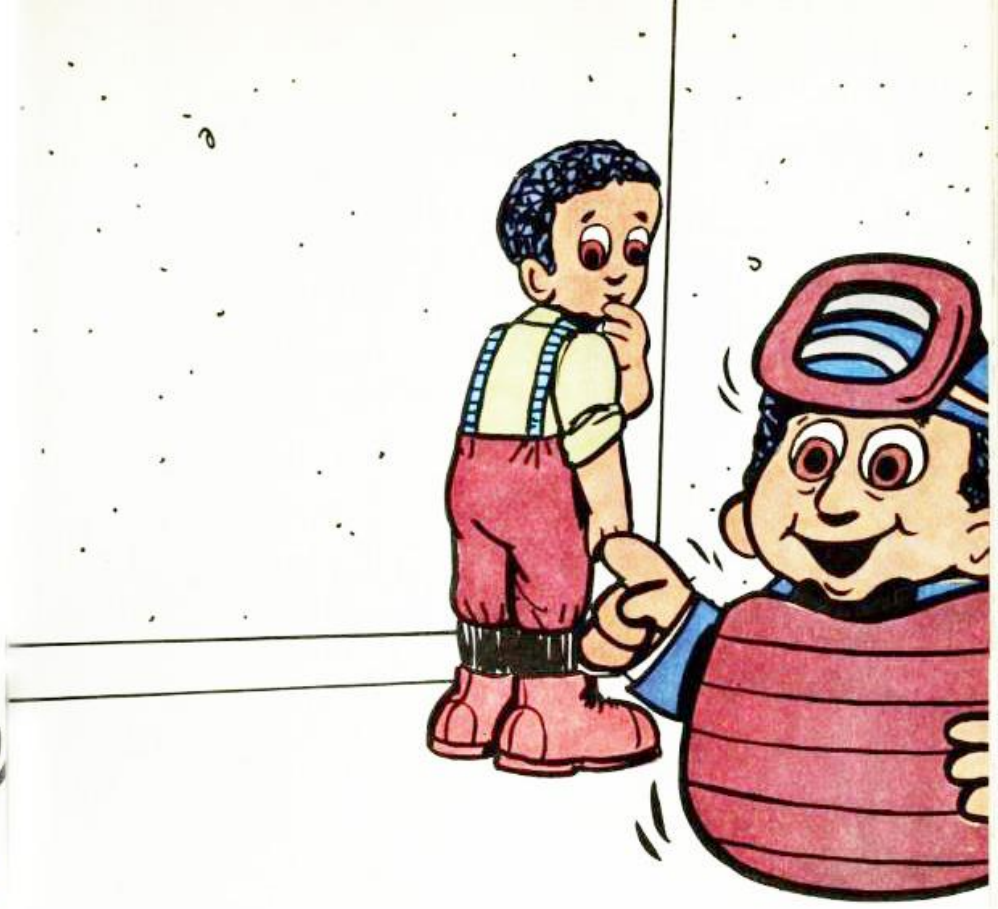

"अगर मिस स्वीट ने तुम्हें पकड़ लिया तो तुम्हें दुःख होगा," अम्प ने उसे चेतावनी दी.

और फिर राल्फ एक दिन पकड़ा गया. मिस स्वीट चाहती थीं कि उनके छात्र सीखें, लेकिन वो इस बात पर भी जोर देतीं थी कि उनके छात्रों का व्यवहार सही हो. जब राल्फ कोई हरकत करता, तो टीचर उसे एक कोने में खड़ा कर देती थीं. और जब रिपोर्ट कार्ड सामने आया, तो राल्फ को आचरण में "सी" ग्रेड मिला.

दादी उस "सी" ग्रेड से बहुत निराश नहीं हुईं. राल्फ ने अपने सभी विषयों में अच्छा किया था, और साथ में वो काम भी कर रहा था. वो अखबार बेच रहा था और रेल-डिपो में लोगों का सामान ढोने में मदद करके कुछ कमा रहा था.

बेशक, दादी भी काम कर रही थीं. दादी हमेशा ही काम करती थीं. मौसी भी काम करती थीं. छोटे बच्चों और राल्फ के माता-पिता को छोड़कर घर में सभी काम करते थे. अब राल्फ की माँ और पिता दोनों बहुत बीमार थे. अल्बुकेरके में आने के एक साल के अंदर ही राल्फ के माता-पिता, दोनों की मृत्यु हो गई.

मौसी रोईं, और राल्फ भी रोया. लेकिन दादी ज्यादा नहीं रोईं. उन्होंने आगे का काम करने की तैयारी करनी थी जो दादी हमेशा करती थीं. इस बार दादी का काम यह सुनिश्चित करना था कि राल्फ अपनी शिक्षा पूरी करे.

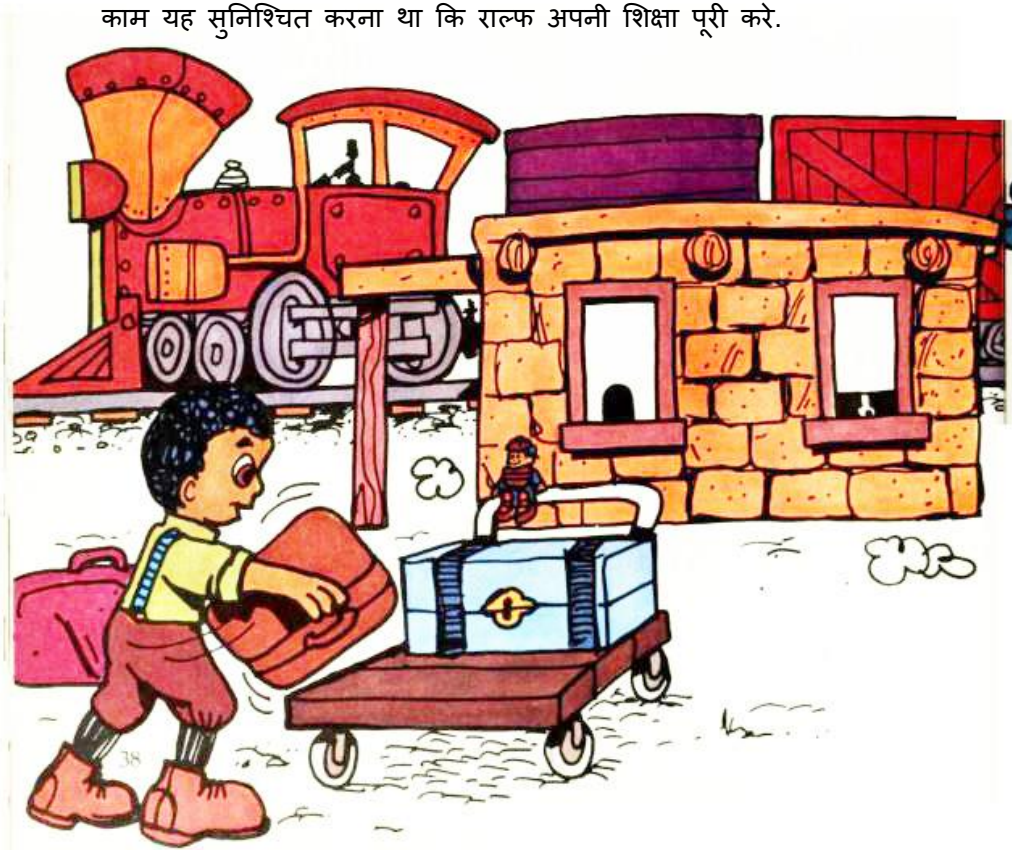

"अब अल्बुकेरके में रहने का कोई फायदा नहीं है," दादी ने कहा. "हम यहाँ से लॉस एंजिल्स जाएंगे. क्योंकि वहां पर एक युवा व्यक्ति के लिए अधिक मौके होंगे."

और इसलिए परिवार फिर से शिफ्ट हुआ.

और जब वे लॉस एंजिल्स पहुंचे, तो आपको क्या लगता है कि वहां क्या हुआ?

राल्फ वहां स्कूल गया. अब राल्फ स्कूल छोड़ने वाला नहीं था.

उसने और अधिक काम किया. गर्मियों में राल्फ को एक समाचार पत्र, "लॉस एंजिल्स टाइम्स" के कार्यालय में एक चपरासी की नौकरी मिल गई. दूसरे साल उसने एक फिल्म स्टार के लिए हाउसबॉय के रूप में काम किया. राल्फ बड़ा और ताकतवर हो गया था और फिर उसने कालीन रंगने वाले एक कारखाने में बड़े-बड़े हौदों को इधर से उधर सरकाने का काम किया.

फिर, जब वो 16 वर्ष का हुआ तो राल्फ, जेफरसन हाई स्कूल में डिबेटिंग-क्लब का सदस्य बन गया.

"तुम वाकई में दमदार हो," अम्प ने कहा. "ज्यादातर काले लड़के हाई स्कूल से पहले ही स्कूल छोड़ देते हैं. और तुम वहां गोरे दर्शकों का सामना करने जा रहे हो!"

"मुझे वो करना ही होगा," राल्फ ने कहा. "अगर मैंने वो नहीं किया, तो उन्हें कैसे पता चलेगा कि काले लोग क्या कर सकते हैं?"

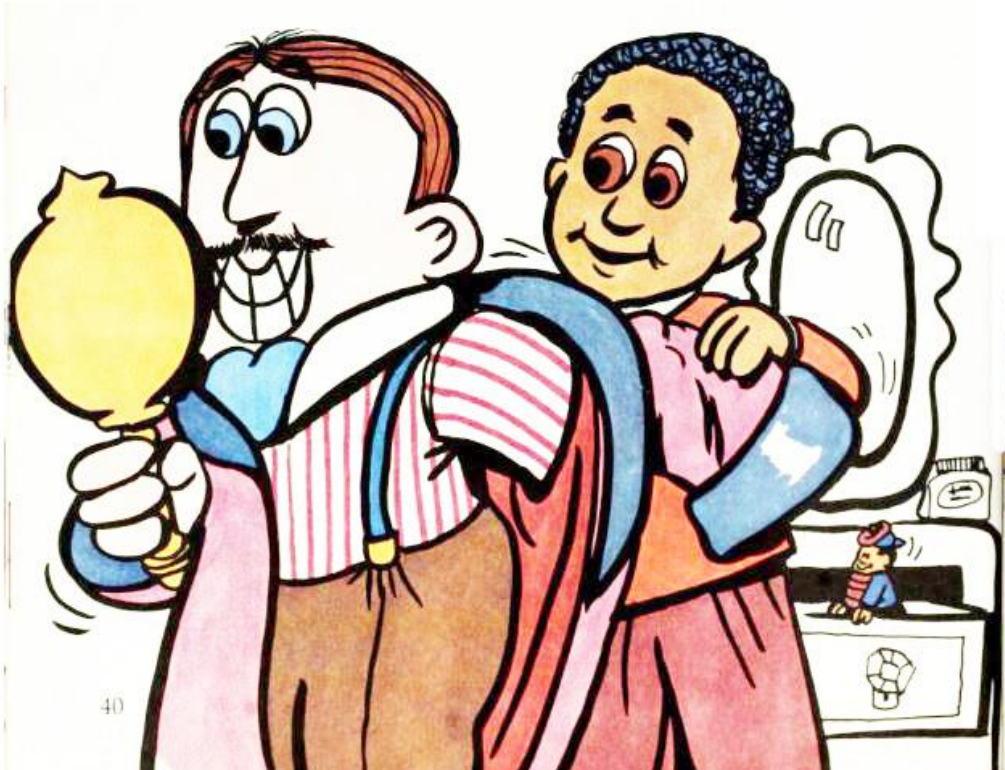

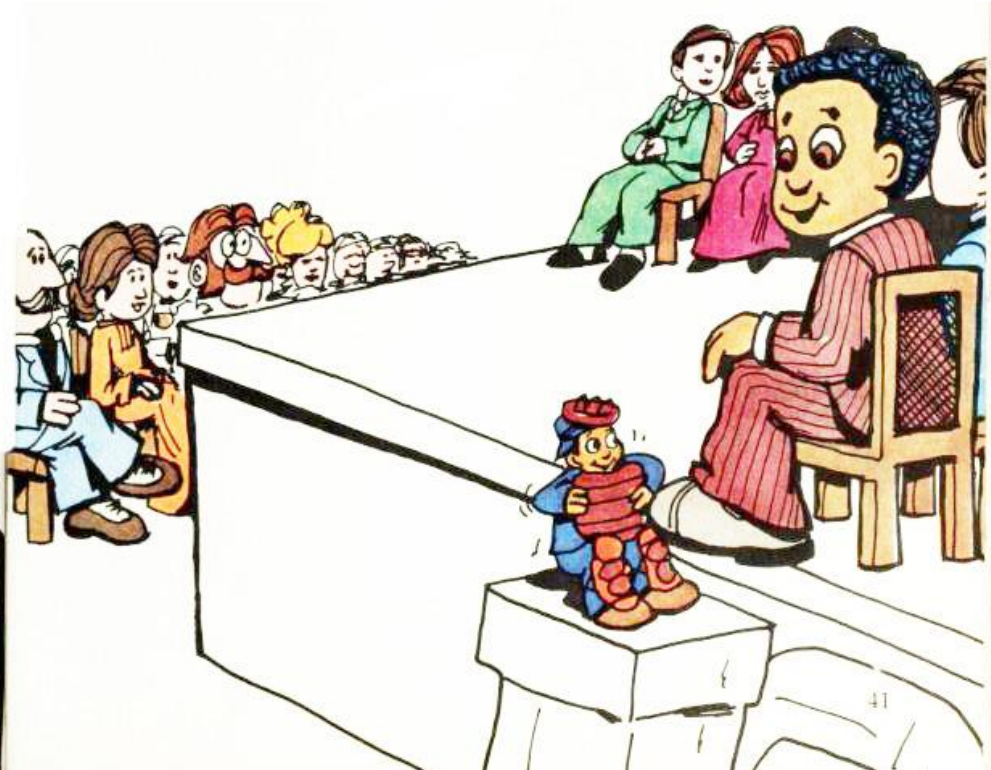

राल्फ, डिबेटिंग-टीम तक ही सीमित नहीं रहा. वो बेसबॉल टीम, फ़ुटबॉल टीम और बास्केटबॉल टीम में भी शामिल हुआ. उसने अपने सभी विषयों में अव्वल नंबर हासिल किए. उसने डिबेटिंग और अंग्रेजी लेखन के लिए भी पुरुस्कार जीते.

ग्रेजुएशन के दिन, राल्फ को पता चला कि उसने पदकों से कुछ ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ जीता है.

"दादी!" उसने ख़ुशी-ख़ुशी कहा. "वे मुझे यू.सी.एल.ए. में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति देना चाहते हैं!"

लेकिन जैसे ही राल्फ ने वो कहा, उसे खेद हुआ. "मैं वास्तव में वहां नहीं जाना चाहता हूँ," उसने जल्दी से कहा. "हमारे ब्लॉक के अधिकांश बच्चों ने हाई स्कूल भी पूरा नहीं किया है. अब समय आ गया है कि मैं पूरे समय काम करूं और कुछ पैसे कमाऊं."

"मुझे लग रहा है," अम्प ने कहा, "कि दादी तुम्हारी बात सुन नहीं रही हैं."

दादी सच में नहीं सुन रही थीं. जब राल्फ ने दादी को अपनी जिम्मेदारियों के बारे में बताया, तो उन्होंने सिर्फ अपना सिर हिलाया. "तुम्हारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी खुद के लिए है, राल्फ बंच," दादी ने कहा. "तुम कॉलेज इसलिए जा रहे हो ताकि तुम खुद को कुछ खास बना सको - क्योंकि तुम वाकई में कुछ खास हो!"

आपको क्या लगता है राल्फ ने फिर क्या किया?

वो कॉलेज में पढ़ने गया. वहां उसने इतनी मेहनत की और उसने इतनी अच्छी पढ़ाई की कि जब स्नातक की उपाधि दी गई उस उसे "सुम्मा कम लाउड" की डिग्री दी गई.

"वे शक्तिशाली महत्वपूर्ण शब्दों की तरह लगते हैं," अम्प ने कहा. "उनका क्या मतलब होता है?"

"उनका मतलब है, उच्चतम प्रशंसा के साथ," राल्फ ने कहा. "उनका मतलब है कि मुझे कॉलेज के स्नातक के नाते वहां का सर्वोच्च सम्मान मिला है."

"तुम्हारी दादी को उसका इतना गर्व है जिसका तुम्हें कोई अंदाज़ नहीं है," अम्प ने कहा. "ज़रा प्रतीक्षा करो. जल्द ही दादी को पता चल जायेगा कि तुम्हें फेलोशिप मिल गई है और तुम हार्वर्ड यूनिवर्सिटी जाने वाले हो!"

"मुझे पता था कि तुम कुछ खास बनोगे," दादी ने खबर सुनकर कहा.

उसके कुछ ही दिनों के बाद एक रात को दादी नींद में चुपचाप चल बसीं. उसके बाद राल्फ को एक भयानक उदासी महसूस हुई.

"चिंता मत करो," अम्प ने कहा. "तुमने उन्हें बहुत खुश किया था. अब जाओ और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करो. दादी को वो अच्छा लगेगा. दादी के सारे सपने तुम्हारे लिए ही थे."

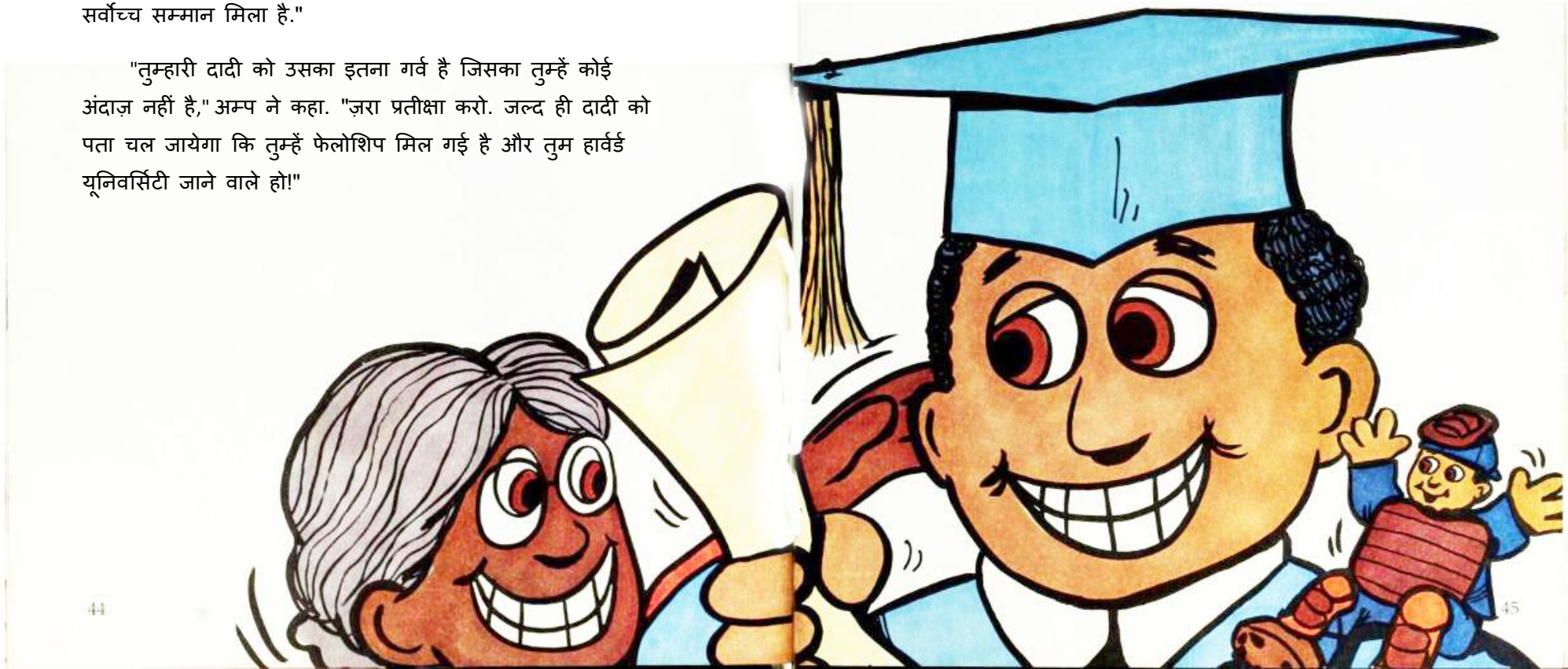

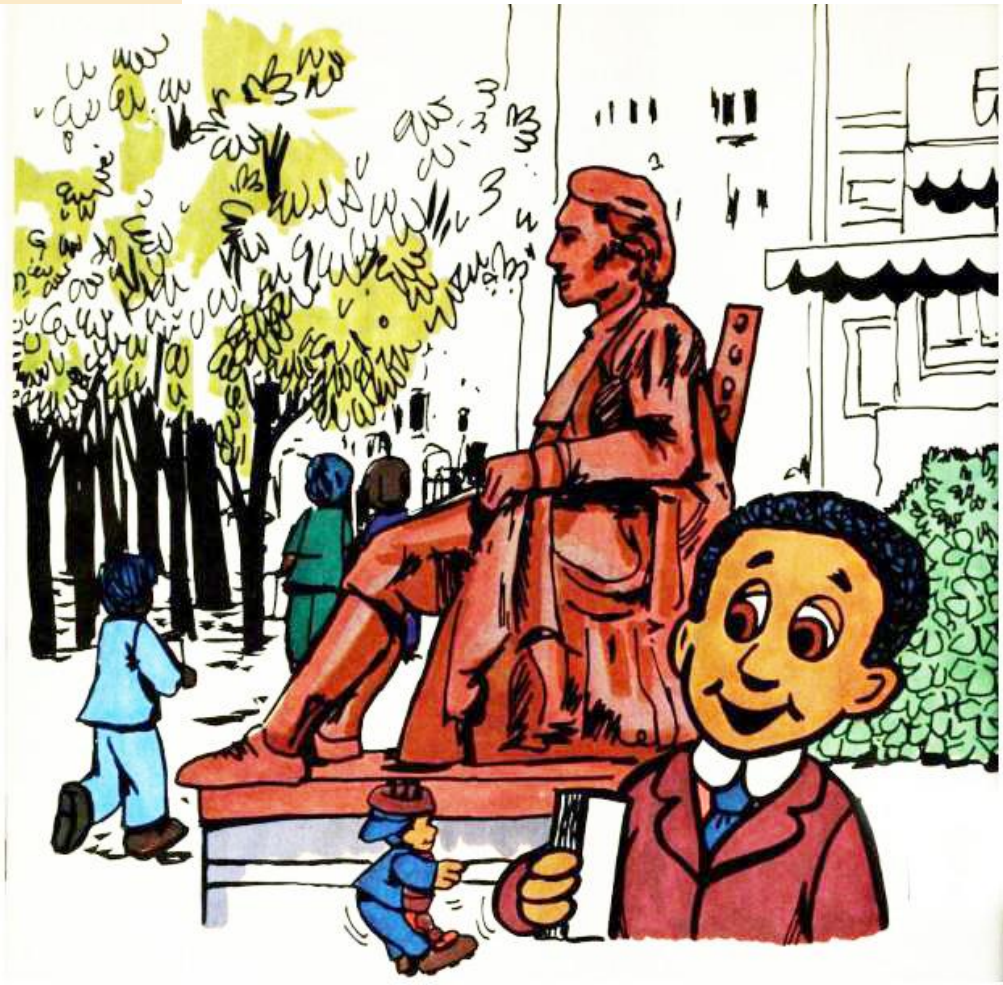

फिर राल्फ हार्वर्ड गया. और वहाँ, वह पहली बार अन्य शिक्षित काले लोगों से मिला. उनमें से अधिकांश छात्र थे, और वे भी राल्फ की तरह ही गरीब थे. लेकिन उन सभी के पास अपने-अपने भविष्य के लिए बहुत अच्छी योजनाएँ थीं. वे अक्सर शाम को कक्षाएं खत्म होने के बाद और काम ख़त्म करने के बाद मिलते थे. उन्होंने इस विषय पर बहुत चर्चा की कि अमेरिका में अश्वेत होना कैसा होता था.

अक्सर बातचीत उत्साहित करती थी. पर कुछ ऐसी बहस होती थीं जो लगभग झगड़ों में बदल जाती थीं.

"अरे!" अम्प ने कहा. "हमें सच में एक अंपायर की ज़रूरत है! किसी को चोट लगने से पहले राल्फ कुछ करो!"

राल्फ तब खूब बहस करता था. क्योंकि उसे हमेशा पता होता था कि वह किस बारे में बात कर रहा था, इसलिए वो जल्दबाजी में, गैर-जिम्मेदाराना टिप्पणी नहीं करता था. इसलिए दूसरे लोग हमेशा शांत होकर उसकी बात सुनते थे.

राल्फ ने हार्वर्ड में अपनी पढ़ाई पूरी करके वाशिंगटन, डीसी में होवर्ड विश्वविद्यालय में एक शिक्षण नौकरी स्वीकार ली. वो देश का सबसे प्रसिद्ध नीग्रो स्कूल था, और राल्फ की कक्षाएं उज्ज्वल, महत्वाकांक्षी युवा काले छात्रों से भरी हुई थीं.

राल्फ एक प्रेरक शिक्षक था, और उसके पास बात करने के लिए हमेशा रोमांचक चीजें होती थीं, इसलिए वो बहुत लोकप्रिय हुआ. लेकिन वो कोई साधारण शिक्षक नहीं था. उसने मांग की कि उसके सभी छात्र अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें.

"इसका जिम्मेदारी से कुछ लेना-देना है, है ना?" अम्प ने पूछा, जब राल्फ एक शाम पेपर मार्क कर रहा था.

राल्फ ने घोषणा की, "इसमें जिम्मेदारी से सब कुछ लेना-देना है. अगर मैं छात्रों के लिए अपनी पूरी कोशिश करता हूं लेकिन यह सुनिश्चित नहीं करता कि वे भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें, तो मैंने वास्तव में कुछ भी हासिल नहीं किया है. वो मेरे लिए अच्छा नहीं है और वो उनके लिए भी अच्छा नहीं है."

तभी राल्फ ने उसकी आँखों में दूर से कुछ देखा.

"लगता है की तुम कुछ अच्छा सोच रहे हो, क्यों है ना?" अम्प ने कहा.

और वो सच था.

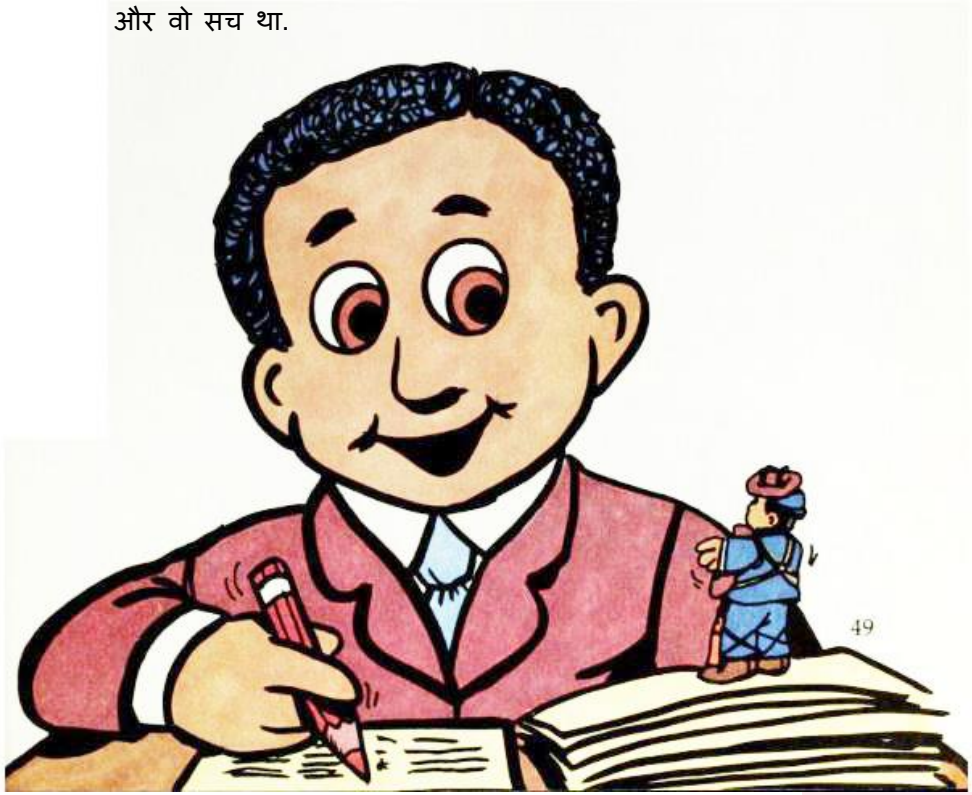

राल्फ एक युवा महिला रूथ हैरिस के बारे में सोच रहा था, जो उसकी एक छात्रा थी.

"क्या तुम्हें नहीं लगता कि रूथ हैरिस कक्षा के अधिकांश छात्रों की तुलना में ज़हीन है?" उसने अम्प से पूछा.

"वो निश्चित रूप से है," अम्प ने कहा. "वो सुंदर भी है. क्या तुमने उसपर कभी ध्यान नहीं दिया?"'

निश्चित रूप से, राल्फ ने रूथ की सुंदरता पर गौर किया था. अगले दिन उसने रूथ को एक रिपोर्ट पर चर्चा करने के लिए बुलाया. राल्फ ने बात की और रूथ ने सुनी. फिर रूथ ने बात की और राल्फ ने सुनी. फिर वे बार-बार मिले, और इससे पहले कि कोई जानता उनकी मंगनी हो गई.

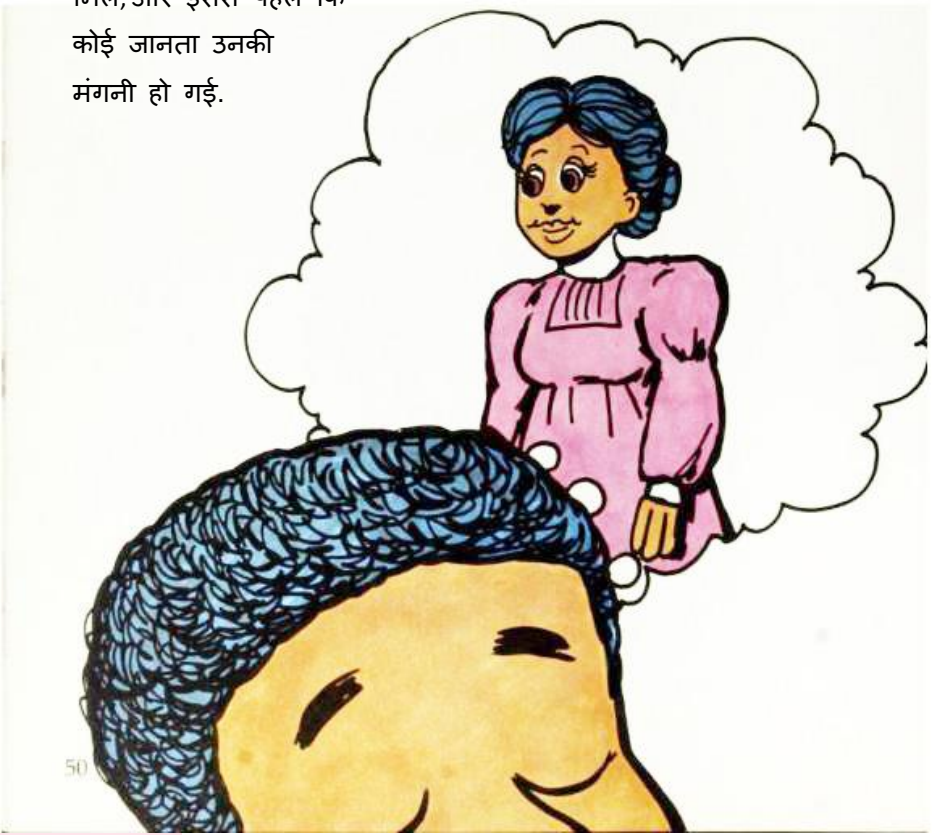

राल्फ की होवार्ड में नौकरी थी, लेकिन उसके पास ज्यादा पैसा नहीं था. उन्हें तब तक काम करना था और बचत करनी थी जब तक कि उनके पास अपने हनीमून के लिए भुगतान करने के लिए 150 डॉलर जमा नहीं होते. फिर उसकी और रूथ की शादी हुई.

ठीक एक साल बाद, राल्फ को वहाँ के लोगों की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए यूरोप और अफ्रीका जाने का मौका मिला.

"यह एक महान अवसर है," राल्फ ने रूथ से कहा, "लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं वहां जाऊँगा. मैं तुम्हें अकेला नहीं छोड़ना चाहता हूँ."

"राल्फ, मुझे पता था कि जब मैंने तुमसे शादी की थी कि तुम एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हो," रूथ ने कहा. "मुझे पता है कि हमें कई बार अलग-अलग रहना होगा. वो ठीक है. तुम आगे जाओ और अपनी पढ़ाई ज़ारी रखो."

"तुमने निश्चित रूप से एक अच्छी महिला से शादी की है," अम्प ने कहा.

"निश्चित रूप से," राल्फ सहमत था. और फिर उसने अपनी यात्रा शुरू की. शादी के बाद के वर्षों में, राल्फ ने पूरी दुनिया में जाकर उन चीजों का अध्ययन किया जिनसे लोगों के बीच मतभेद और समस्याएं पैदा होती थीं. उस अध्ययन को आगे बढ़ाने के लिए वो हार्वर्ड वापस गया, और वो अमेरिका में राजनीति विज्ञान में डॉक्टर की डिग्री प्राप्त करने वाले पहला अश्वेत बना. उसका जीवन भरपूर और खुशहाल था, और फिर भी वो हमेशा सपने देखने में व्यस्त रहता था.

"हमें वास्तव में क्या चाहिए," उन्होंने अम्प से कहा, "एक ऐसी जगह चाहिए जहां दुनिया के हर देश के लोग मिल सकें और आपस में बातचीत कर सकें - एक ऐसी जगह जहां वे अपने मतभेदों को सुलझाने के तरीकों पर चर्चा कर सकें."

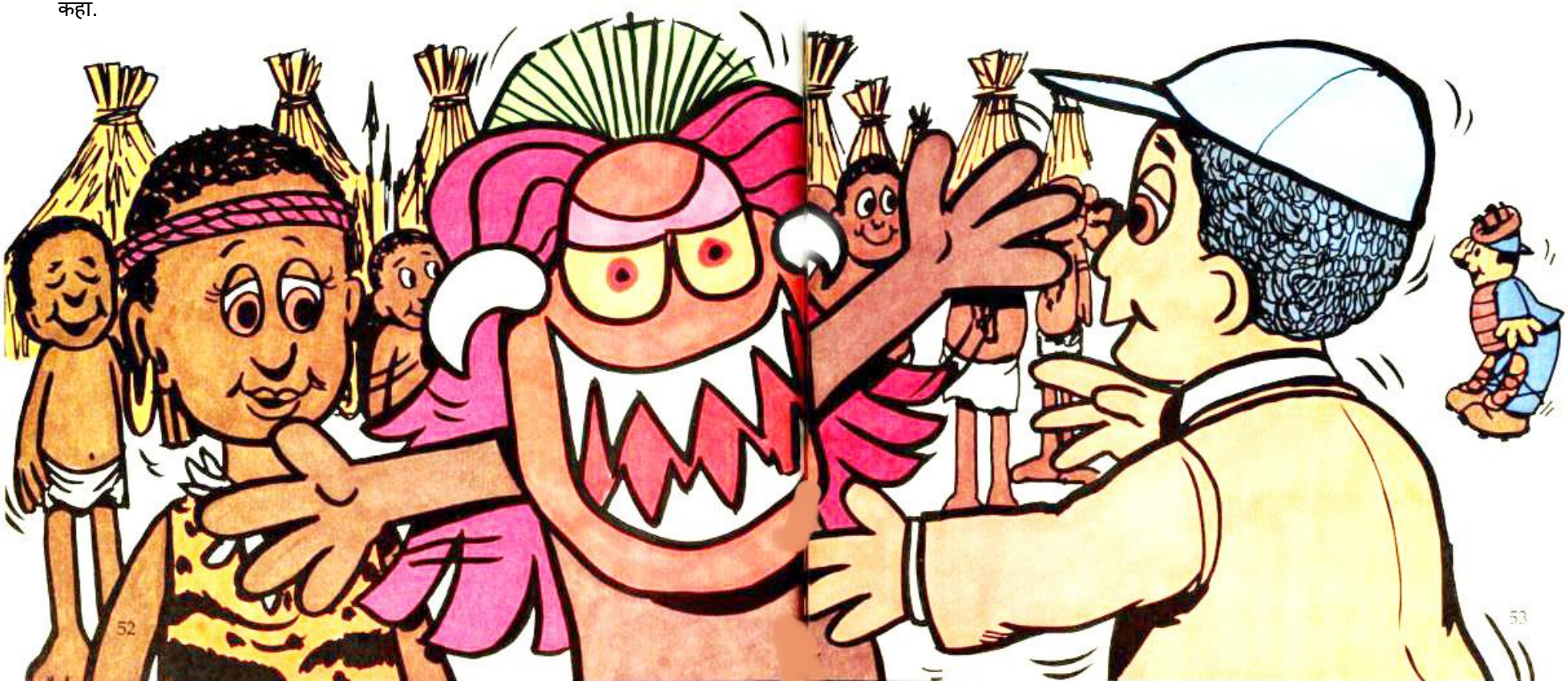

1941 में, अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध में प्रवेश किया, और तब राल्फ सरकार का सलाहकार बना. फिर, 1943 में, वे राज्य विभाग का डिवीजन हेड नामित होने वाला पहला अश्वेत बना.

"आप उन्हें कुछ दिखा रहे हैं," अम्प ने कहा. "आप उन्हें दिखा रहे हैं कि एक काला आदमी किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह ही जिम्मेदार हो सकता है. बहुत से लोगों को इस बात का एहसास नहीं है."

"उन्हें इसका ज़रूर पता चल जायेगा," राल्फ ने चुपचाप कहा.

1945 में युद्ध समाप्त होने पर राल्फ बंच निश्चित रूप से प्रसिद्ध नहीं था, लेकिन सरकार के अफसर उसे अच्छी तरह जानते थे. वे जानते थे कि वो प्रतिभाशाली था. वे जानते थे कि उसने खुद को तैयार किया था और चीजों के बारे में पता लगाया था और वो मुद्दों को समझ गया था. संक्षेप में, उन्हें पता था कि राल्फ ज़िम्मेदार था, और वो अन्य लोगों को भी ज़िम्मेदार बनाने में सक्षम था.

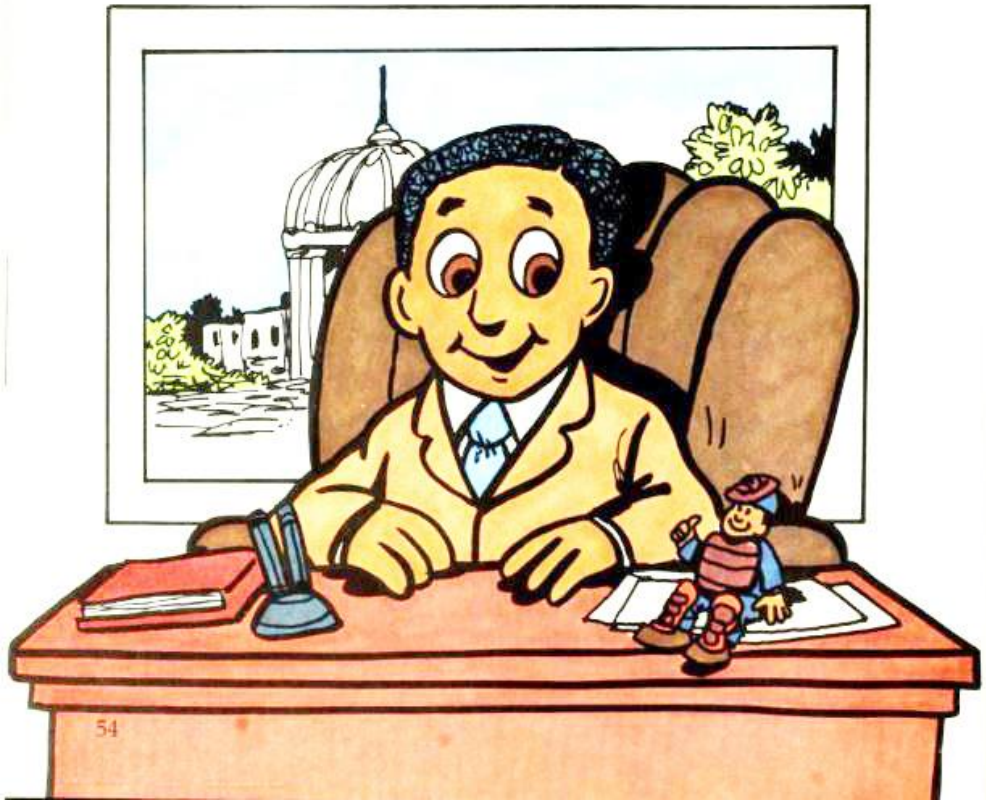

क्योंकि वो इन गुणों के लिए जाना जाता था इसलिए राल्फ को संयुक्त राष्ट्र (यूनाइटेड नेशंस) का चार्टर तैयार करने में मदद करने के लिए कहा गया.

"वो बहुत बढ़िया है!" राल्फ ने कहा. "मेरा सपना सच हो रहा है! अंत में, हमारे पास एक ऐसा मंच होगा जहां सभी देशों के लोग अपनी समस्याओं पर चर्चा करने के लिए मिल सकते हैं!"

"उसका समय अब आ गया है!" अम्प ने कहा.

एक समय के लिए ऐसा लग रहा था कि संयुक्त राष्ट्र शायद फेल हो जाए. 1947 में, जब अंतर्राष्ट्रीय संगठन अभी भी नया था, इस्राइल के नए राष्ट्र की स्थापना पर असहमति होने के कारण फिलिस्तीन में युद्ध शुरू हो गया.

ट्रिगवे ले, संयुक्त राष्ट्र के महासचिव थे. उन्होंने राल्फ को बुलाया. "आप राजनयिक हैं," उन्होंने राल्फ से कहा. "आप धीमी आवाज़ में बात करते हैं, लेकिन जब आप बात करते हैं, तो लोग आपकी बात सुनते हैं. आप लोगों को जिम्मेदारी से व्यवहार करवा सकते हैं. क्या आप अरबों और यहूदियों को लड़ने से रोकने और शांति संधि पर हस्ताक्षर करने की कोशिश कर सकते हैं?"

"यह एक कठिन काम होगा," अम्प ने कहा. "अरब और यहूदी एक-दूसरे को बहुत पसंद नहीं करते हैं. उन्हें एक-दूसरे की बात मनवाने में तुम्हें बहुत कठिन मेहनत करनी होगी."

"मैं ज़रूर कोशिश करूंगा," राल्फ ने अपना सूटकेस पैक करते हुए कहा. "यदि संयुक्त राष्ट्र इस बार शांति स्थापित करने में विफल रहा, तो शायद फिर वो कभी एक शांति बनाने वाली संस्था के रूप में कार्य करने में सक्षम नहीं होगा."

अरबों और यहूदियों के बीच ग्रीस के रोड्स द्वीप में बैठकें हुईं. राल्फ ने वहां लंबे समय तक काम किया. उन्होंने दोनों पक्षों से, शांति कायम करने की अपील की. कभी-कभी वो नाराज भी हो जाते थे. अक्सर राल्फ थक जाता था. उसे रूथ की याद आती थी, और वो घर जाना चाहता था. लेकिन उसने हार नहीं मानी.

"तुम वाकई में अच्छे अंपायर हो!" अम्प ने कहा.

"मैं वैसी उम्मीद करता हूँ," राल्फ ने घोषणा की. फिर उन्होंने एक अंतिम बैठक के लिए प्रतिनिधियों को एक साथ बुलाया. वो एक ऐसी बैठक थी जो पूरे दिन और पूरी रात चली. सब थक गए, लेकिन राल्फ ने किसी को जाने नहीं दिया. वो लोगों से चर्चा करता रहा. और क्योंकि लोग उसे जानते थे और वे उस पर भरोसा करते थे—क्योंकि वो जिम्मेदार था—वो उन लोगों को भी जिम्मेदार बनाने में सक्षम रहा.

अंत में, जैसे ही रोड्स पर सूरज उग आया, संधि पर हस्ताक्षर किए गए! राल्फ बंच ने फिलिस्तीन में युद्ध समाप्त कर दिया था, और संयुक्त राष्ट्र शांति बनाए रखने में सक्षम हुआ था.

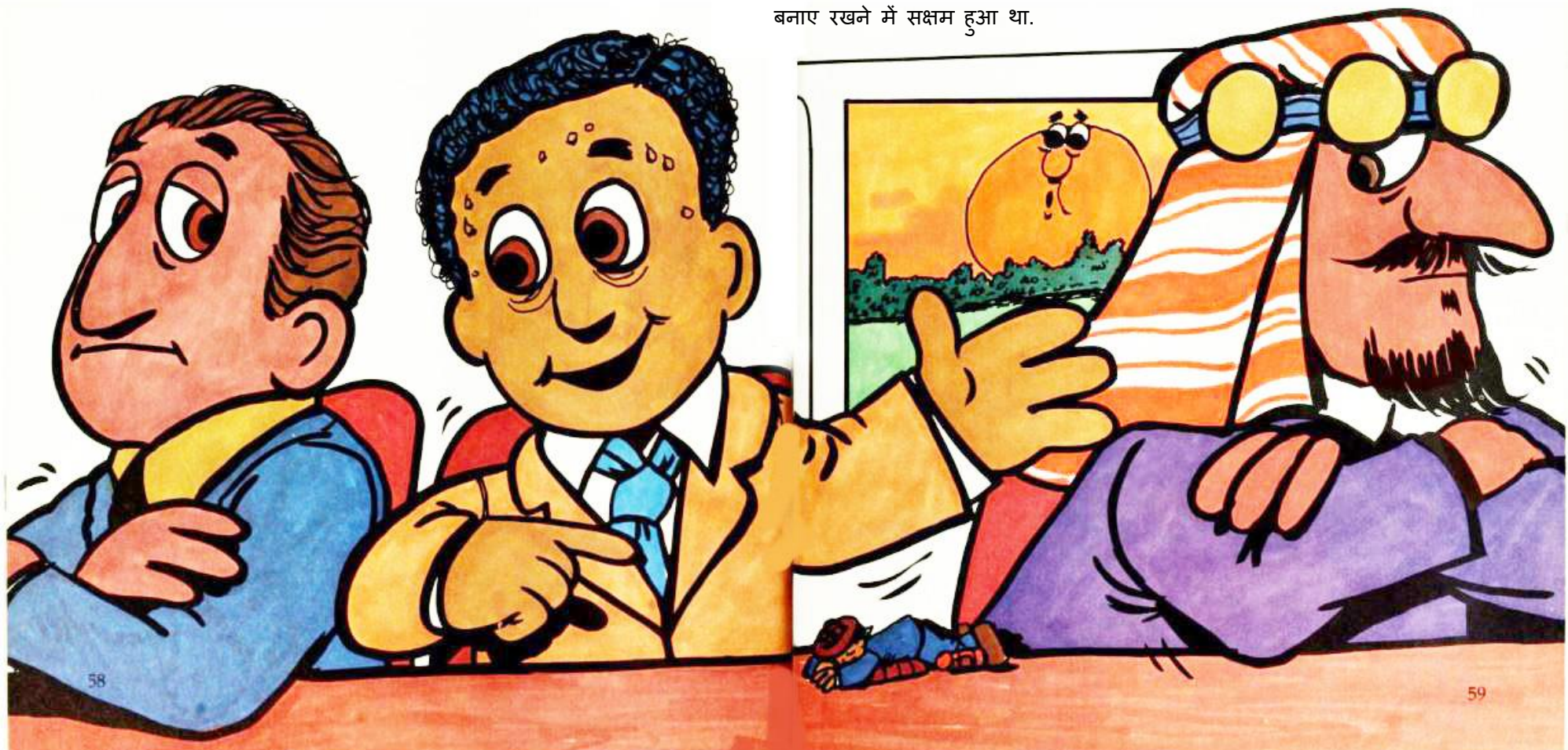

राल्फ जब रोड्स से घर गए तो एयरपोर्ट पर लोगों की भीड़ उनसे मिलने आई. मैनहट्टन में उनके सम्मान में एक परेड आयोजित की गई, और उसने व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति ट्रूमैन के साथ यात्रा की. उसने लॉस एंजिल्स की भी यात्रा की, जहां "राल्फ बंच डे" मनाने के लिए हज़ारों लोग इकट्ठे हुए.

फिर राल्फ को बताया गया कि उन्हें दुनिया का सबसे महान सम्मान दिया जाएगा - नोबेल शांति पुरस्कार!

"तुम्हारी दादी को तुम पर बहुत गर्व होगा!" अम्प ने कहा.

राल्फ को पता था कि अगर उसकी दादी ज़िंदा होतीं वो वो बेहद खुश होतीं. और इस विचार ने राल्फ को खुश किया. उसे यह जानकर और भी खुशी हुई कि वो जिम्मेदार थे. उन्होंने फिलिस्तीन में शांति लाने में मदद की थी, और उससे उन्होंने संयुक्त राष्ट्र को बचाने में भी मदद की थी. उन्होंने देखा कि उन्हें क्या करने की ज़रुरत थी और उन्होंने वो किया.

जब आप कुछ ऐसा देखते हैं जिसे करने की ज़रुरत होती है, तो क्या आप उसे ध्यान से करते हैं? अगर आप ऐसा करते हैं, तो आप भी ज़िम्मेदार हैं और लोग भी आपके प्रति ज़िम्मेदार हैं. और फिर इस बात की संभावना है कि वो बात आपको खुश करेगी.

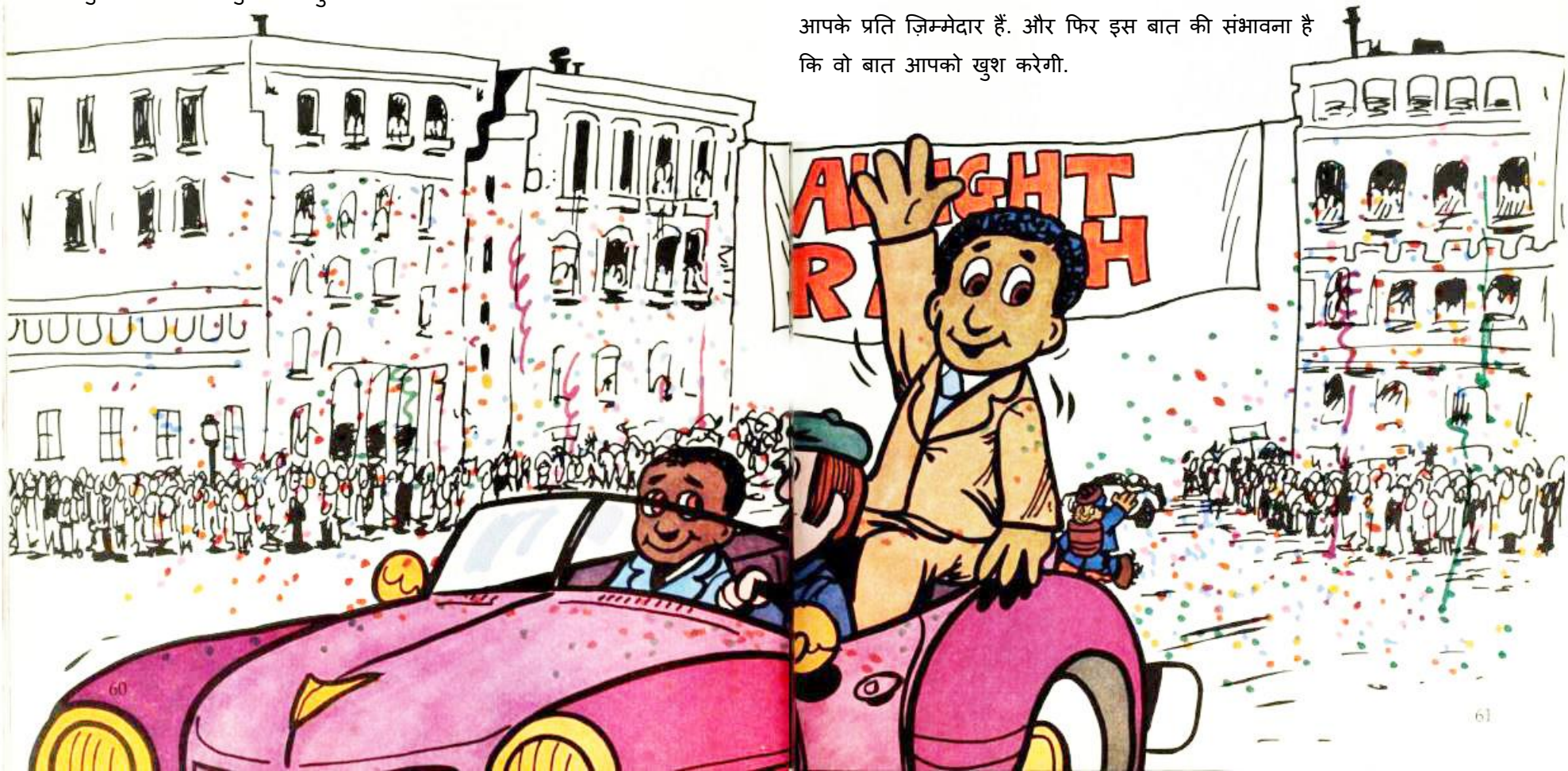

बिल्कुल हमारे अच्छे दोस्त राल्फ बंच की तरह.

ऐतिहासिक तथ्य

राल्फ बंच

1904-1971

नस्ल संबंधों के क्षेत्र में, दुनिया के अग्रणी विद्वानों में से एक, राल्फ जॉनसन बंच, संयुक्त राष्ट्र को स्थापित करने में एक प्रमुख व्यक्ति थे. 1950 में उन्हें नए राज्य इज़राइल और अरब राष्ट्रों के बीच फिलिस्तीनी युद्ध के निपटारे के लिए नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था.

राल्फ बंच का जन्म 7 अगस्त, 1901 को मिशिगन के डेट्रायट में हुआ था. वो एक नाई, फ्रेड बंच और ओलिव एग्नेस जॉनसन बंच के पुत्र थे, जिनके पिता एक गुलाम के रूप में पैदा हुए थे.

1915 में बंच परिवार अलबुरकेरके, न्यू मैक्सिको चला गया क्योंकि राल्फ की माँ को रूमेटिक बुखार हो गया था और उनके पिता को तपेदिक (टी. बी.) हो गई थी. बंच के माता-पिता को को दक्षिण-पश्चिम की गर्म, शुष्क जलवायु से लाभ होने की उम्मीद थी. जब वे अलबुरकेरके में रहते थे, तब राल्फ एक शिक्षिका मिस एम्मा स्वीट से मिले, जिन्होंने उन्हें एक श्रेष्ठ छात्र बनने के लिए प्रेरित किया.

राल्फ की दादी लुसी जॉनसन भी, उनके जीवन को आकार देने में काफी प्रभावशाली थीं. राल्फ ने उनका वर्णन इस प्रकार किया, "मैं अब तक की सबसे दमदार महिला को जानता था, भले ही वो पाँच फीट से भी कम ऊँची थीं." लुसी जॉनसन ने, राल्फ और उसकी बहन के माता-पिता की मृत्यु के बाद, उनकी परवरिश का कार्यभार संभाला, और उन्होंने राल्फ से अपनी शिक्षा पूरी करने का पुरज़ोर आग्रह किया. 1922 में लॉस एंजिल्स में जेफरसन हाई से स्नातक होने के बाद उन्हें अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखने के बारे में संदेह था, लेकिन उनकी दादी ने उन्हें लॉस एंजिल्स में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में छात्रवृत्ति स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया.

U.C.L.A. में, राल्फ ने जबरदस्त अनुशासन और महान ऊर्जा का प्रदर्शन किया जो उनके पूरे करियर की विशेषता थी. वो तीन चैंपियनशिप विश्वविद्यालय बास्केटबॉल टीमों में एक स्टार थे, और उन्होंने जमकर फुटबॉल और बेसबॉल भी खेला. उन्होंने विभिन्न वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लिया, और जब उन्होंने 1927 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की, तो वे "फाई बेटा कप्पा" के सदस्य थे और उन्होंने "सुम्मा कम लाउड" डिग्री हासिल की.

U.C.L.A से, राल्फ, मास्टर की डिग्री के लिए हार्वर्ड विश्वविद्यालय गए. इसके बाद वे वाशिंगटन, डीसी में होवार्ड विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान में एक प्रशिक्षक बन गए, होवार्ड में उन्होंने रूथ हैरिस से मुलाकात की और शादी की. होवार्ड में चार साल तक पढ़ाने के बाद, वो अपनी डॉक्टरेट पर काम शुरू करने के लिए हार्वर्ड लौट आए. 1934 में, हार्वर्ड से, राजनीति विज्ञान में वे पीएच.डी. प्राप्त करने वाले पहले नीग्रो बने.

राल्फ ने हावर्ड में अध्यापन जारी रखा, और संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड और अफ्रीका में लोगों की सामाजिक परिस्थितियों का भी अध्ययन ज़ारी रखा. वो जल्द ही सरकार में लोगों के बीच एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जाने जाने लगे, जो औपनिवेशिक लोगों के बारे में बहुत कुछ जानते थे. उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान विदेश विभाग के लिए भी काम किया, और 1946 में वे संयुक्त राष्ट्र ट्रस्टीशिप डिवीजन के निदेशक बने.

1948 में राल्फ बंच ने काउंट फोल्के बर्नाडोटे की जगह ली जो संयुक्त राष्ट्र फिलिस्तीन आयोग के मुख्य मध्यस्थ थे. इजरायल और अरब नेताओं के बीच एक संधि पर बातचीत करने की कोशिश के दौरान बर्नाडोट की हत्या कर दी गई थी. राल्फ की जगह लेने के बाद, वार्ता को फिलिस्तीन से रोड्स द्वीप पर तटस्थ क्षेत्र में ले जाया गया. वहां राल्फ ने अपने सम्पूर्ण राजनयिक कौशल का इस्तेमाल करके दोनों गुटों को शांति स्थापित करने के लिए मना लिया. उन्होंने चौबीसों घंटे दोनों समूहों के नेताओं से बात करके वार्ता की प्रगति पर ज्ञापन देने का काम किया.

राल्फ बंच को अपने जीवनकाल में दुनिया का सम्मान और प्रशंसा प्राप्त हुई. इसमें कोई शक नहीं कि यह उनके लिए महत्वपूर्ण था. लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह जानना था कि राल्फ वो कर पाए जो वो करने निकले थे. अगर वो अपनी थकान या गुस्से के आगे झुक जाते, तो रोड्स वार्ता असफल हो जाती, और फिर फिलिस्तीन में युद्ध जारी रहता और बहुत लोगों की जानें भी जातीं. और तब संयुक्त राष्ट्र एक शांति सेना के रूप में हमेशा के लिए अपंग हो जाती.